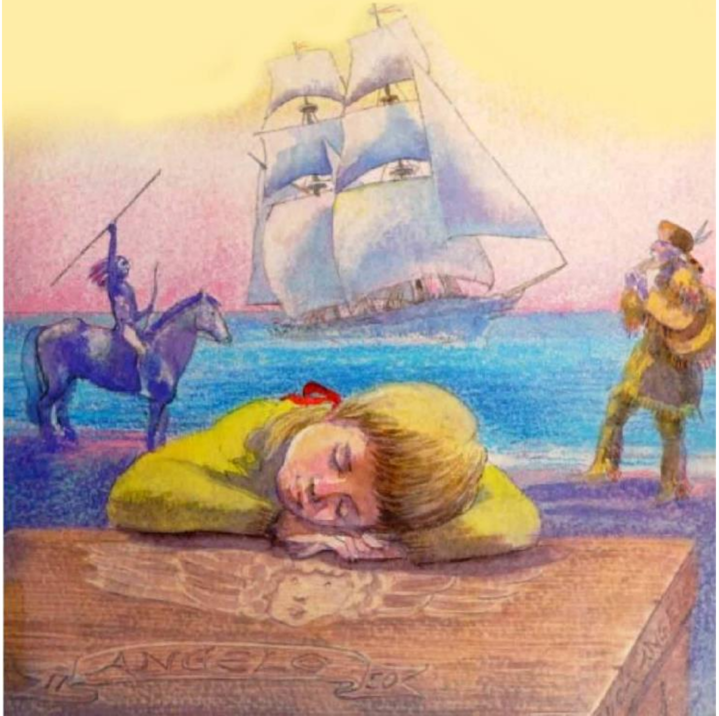
एंजल और समय का सन्दूक

लेखन व चित्रः माइकल फोरमैन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



एंजल और समय का सन्दूक



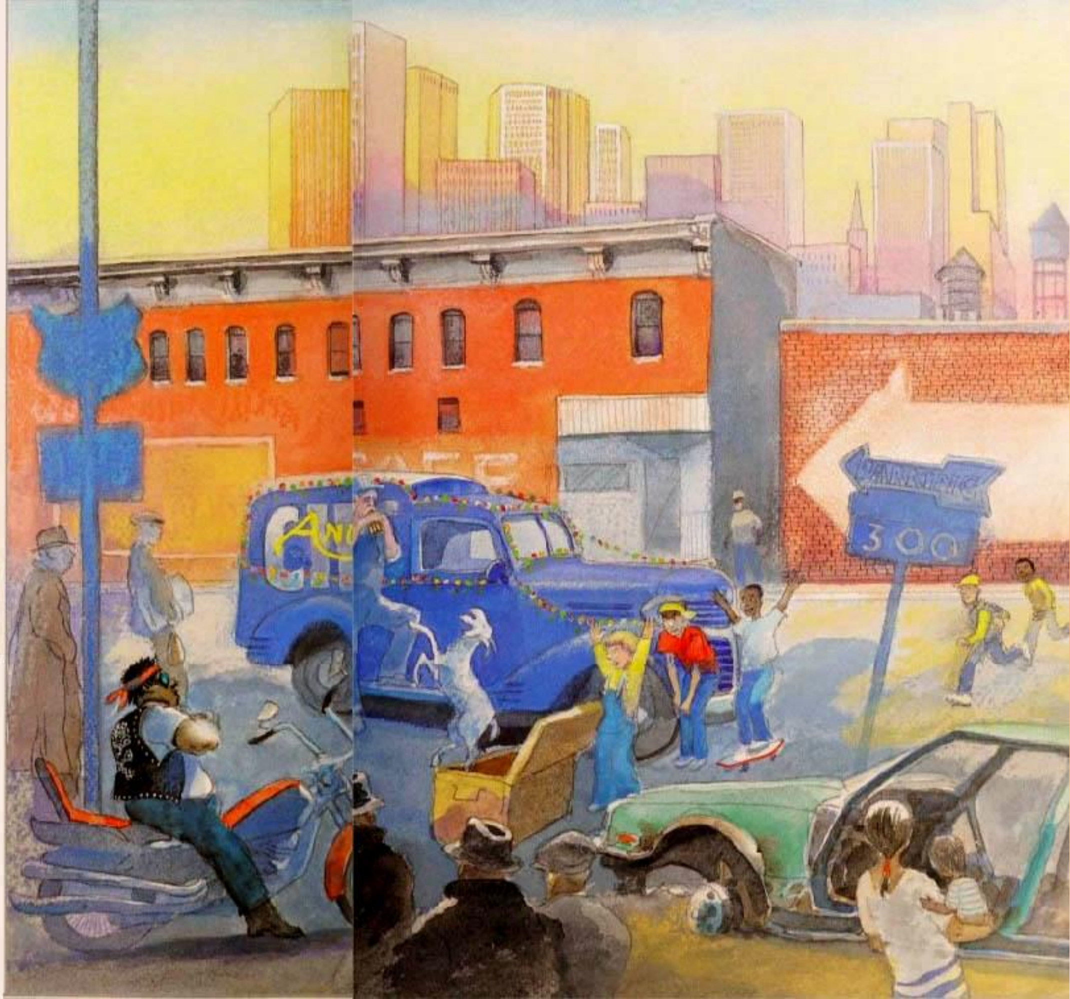
लेखन व चित्रः माइकल फोरमैन

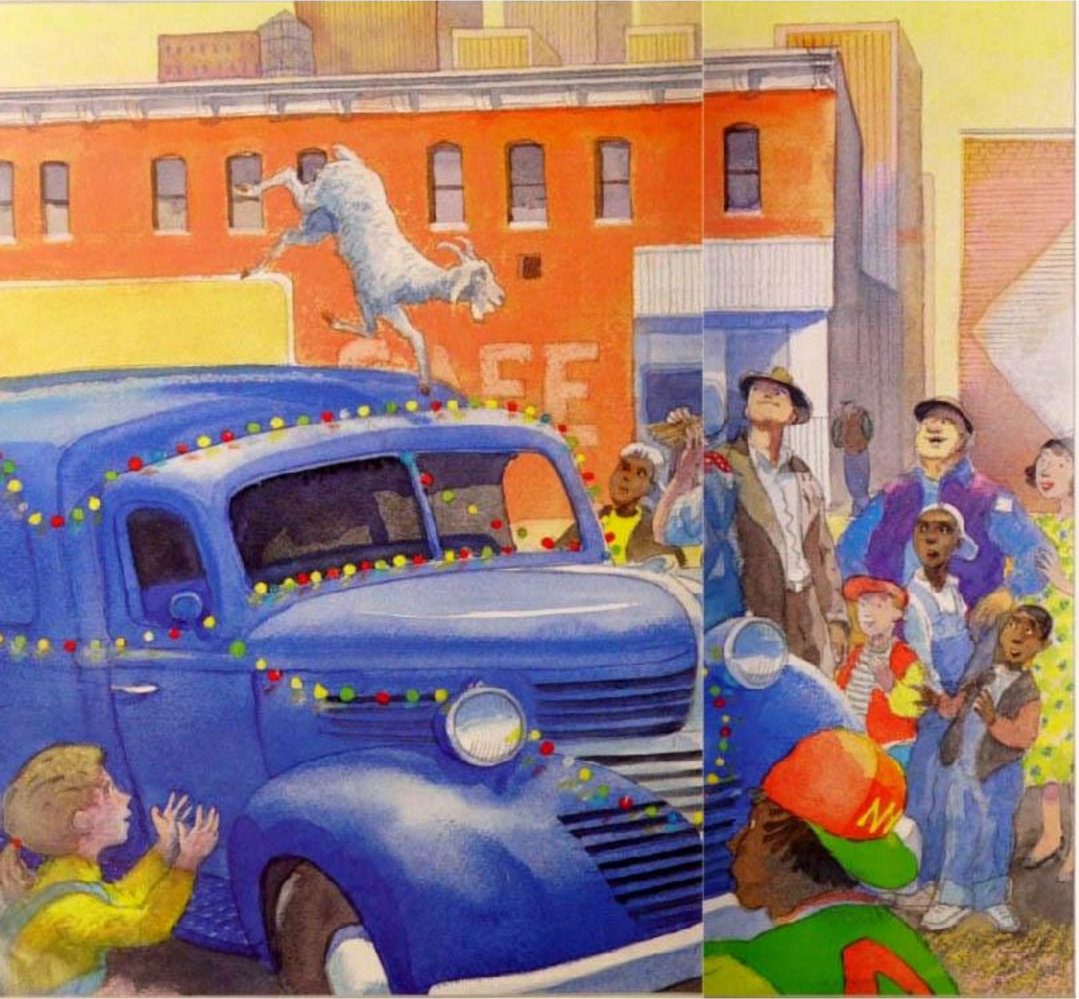
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

एंजल बेसब्र थी। वह पहली बार दादाजी के साथ सफ़र जो करने वाली थी, उनके घुमन्तू प्रदर्शन को भी देखने वाली थी। उनका 'शो' छोटा-सा था। दादाजी के पास एक पुराना ट्रक था और था एक बेहद पुराना लकड़ी का सन्दूक जिस पर कई नाम खुदे हुए थे।



पूरा दिन ट्रक से सफ़र करने के बाद वे दोनों एक बड़े शहर में पहुँचे। दादाजी ने सन्दूक से रंगीन बत्तियों की लड़ियाँ निकालीं और उनसे अपने ट्रक को सजा दिया। इसके बाद उन्होंने तब तक अपनी बीन बजाई, जब तक एक छोटी-मोटी भीड़ जमा न हो गई। अचानक सन्दूक का ढ़क्कन खुला, और अन्दर से एक बकरा निकला जो बीन के संगीत पर नाचने लगा।





दादाजी ने पहले-पहल धीमी धुन बजाई, पर तब उसकी गति तेज़, और तेज़ होती गई। बकरा ट्रक की छत पर कूदा और वहाँ गोल-गोल घूमता नाचने लगा। उसके खुर ढ़ोल की थाप बजाते लग रहे थे और वह बिलकुल बेताल नहीं हुआ। ज़ाहिर था कि बकरे को नाचने में मज़ा आ रहा था।



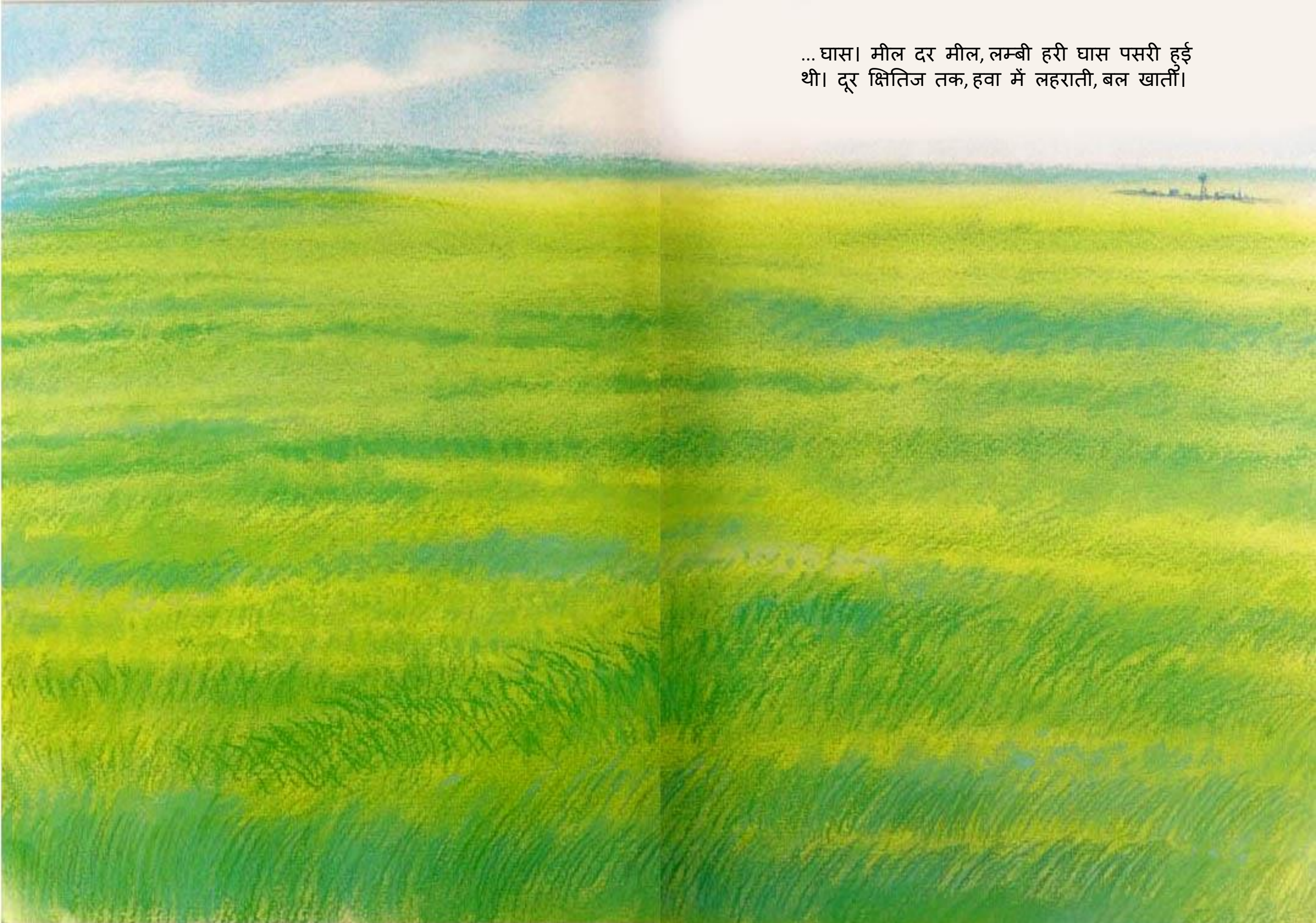
तब हुआ एक धमाका! धुंए का गुबार उठा। धुंआ छंटता उसके पहले बत्तियों की लड़ियाँ, बीन और बकरा गायब हो चुके थे। जब एंजल और दादाजी ट्रक में बैठ आगे बढ़े, उन्हें तब भी भीड़ की तालियाँ और वाह-वाही सुनाई दे रही थी।



जल्द ही वे एक पेट्रोल स्टेशन पर रुके। इधर दादाजी पेट्रोल भरवाने और रात के खाने के लिए कुछ ख़रीदने में लगे थे, उधर ऐंजल को बकरे की फिक्र सताने लगी। काश वह उसे खाने को मुट्ठी भर घास ही दे पाती। खिड़की के बाहर उसे सिर्फ़ कांक्रीट और नियोन बत्तियों की दुनिया दिखी। तब उसने सन्दूक में हवा आने-जाने के लिए बने सुराख़ों में से एक के अन्दर झांका, और देखी ...

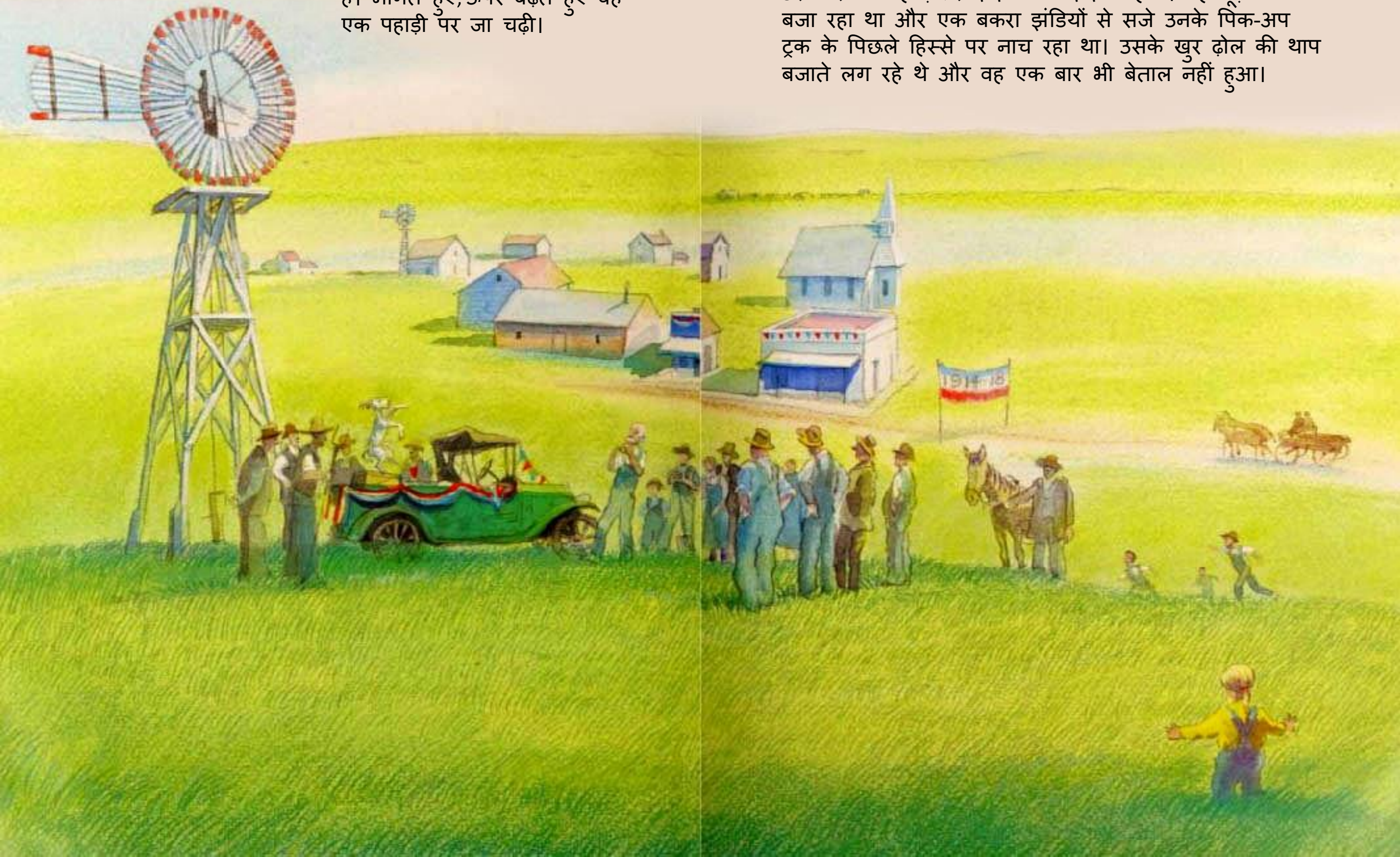


... घास। मील दर मील, लम्बी हरी घास पसरी हुई थी। दूर क्षितिज तक, हवा में लहराती, बल खाती।



एंजल को अपने चेहरे पर हवा का अहसास हुआ। तब लगा कि वह घास के बीच दौड़ती चली जा रही है। भागते हुए, ऊपर बढ़ते हुए वह एक पहाड़ी पर जा चढ़ी।

वहाँ उसके सामने एक छोटा कस्बा था, जिसमें एक छोटी भीड़ जमा था। भीड़ के बीच एक बूढ़ा आदमी था जो दादाजी जैसा नज़र आ रहा था, पर वह दादाजी तो हो ही नहीं सकता था। उसने सोचा यह ज़रूर दादाजी के दादाजी होंगे। वह बूढ़ा बीन बजा रहा था और एक बकरा झंडियों से सजे उनके पिक-अप ट्रक के पिछले हिस्से पर नाच रहा था। उसके खुर ढ़ोल की थाप बजाते लग रहे थे और वह एक बार भी बेताल नहीं हुआ।





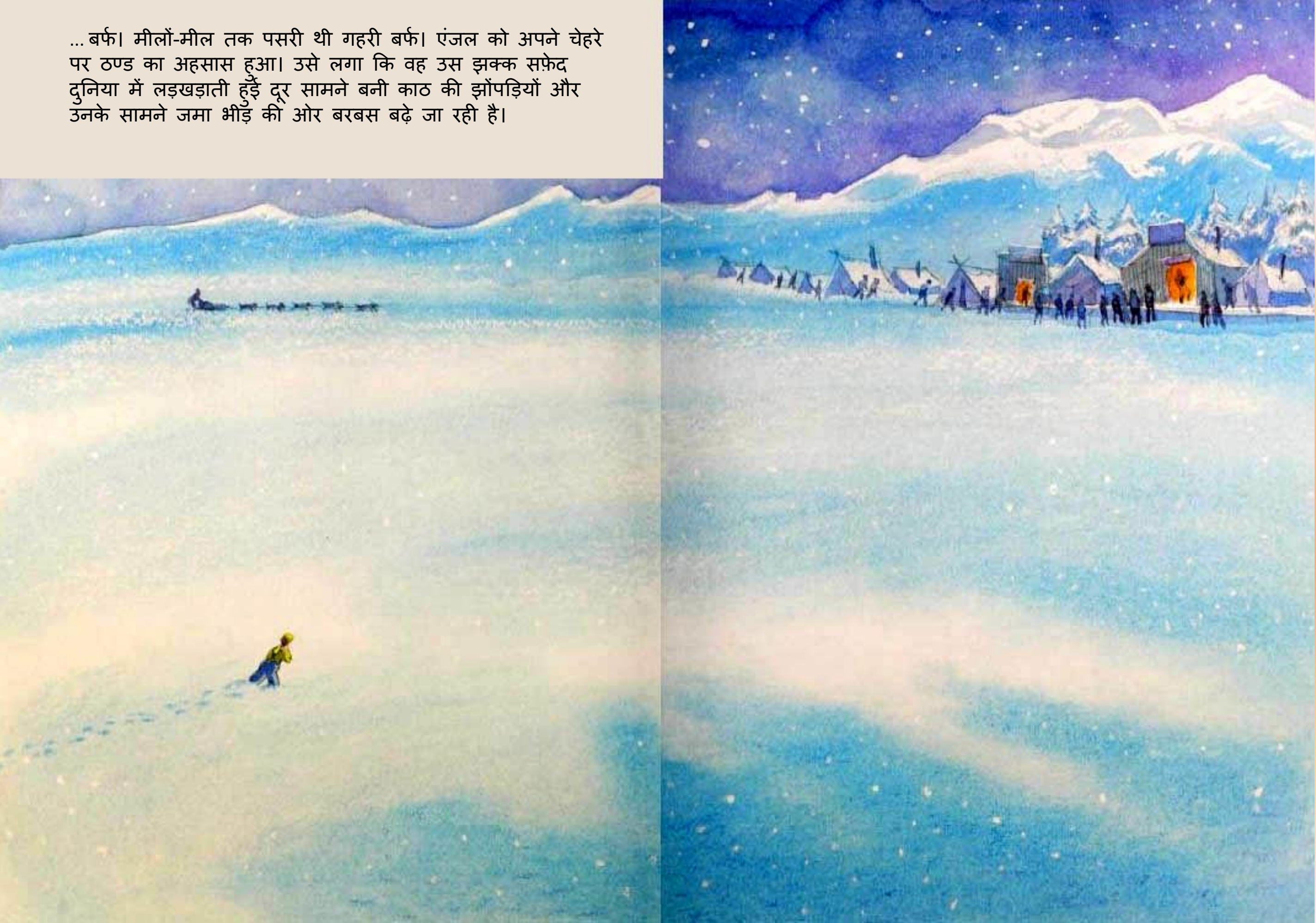
तब अचानक एक धमाका हुआ, धुंए का गुबार उठा और झंडियाँ, बीन और बकरा सब बूढ़े के पुराने सन्दूक में गायब हो गए।



भीड़ ने वाह-वाही की। एंजल सन्दूक की ओर दौड़ी। वह उसके एक सुराख़ से झाँक ही रही थी कि बूढ़ा मुस्कुराया। एंजल ने देखी ...



... बर्फ। मीलों-मील तक पसरी थी गहरी बर्फ। एंजल को अपने चेहरे पर ठण्ड का अहसास हुआ। उसे लगा कि वह उस झक्क सफ़ेद दुनिया में लड़खड़ाती हुई दूर सामने बनी काठ की झोंपड़ियों और उनके सामने जमा भीड़ की ओर बरबस बढ़े जा रही है।





उस भीड़ के बीच था एक बूढ़ा आदमी, जो दिख तो दादाजी सा रहा था, परवह दादाजी तो हो नहीं सकता था। उसने साचा कि वह इन्सान ज़रूर उसके दादाजी के पर-दादाजी होंगे। वे भी बीन बजा रहे थे। एक बकरा झोंपड़ों की छतों पर नाचते हुए चौ-तरफ बर्फ को छितरा था। ढ़ोल की थाप जैसे बजते हुए उसके खुर एक बार भी बेताल नहीं हुए।

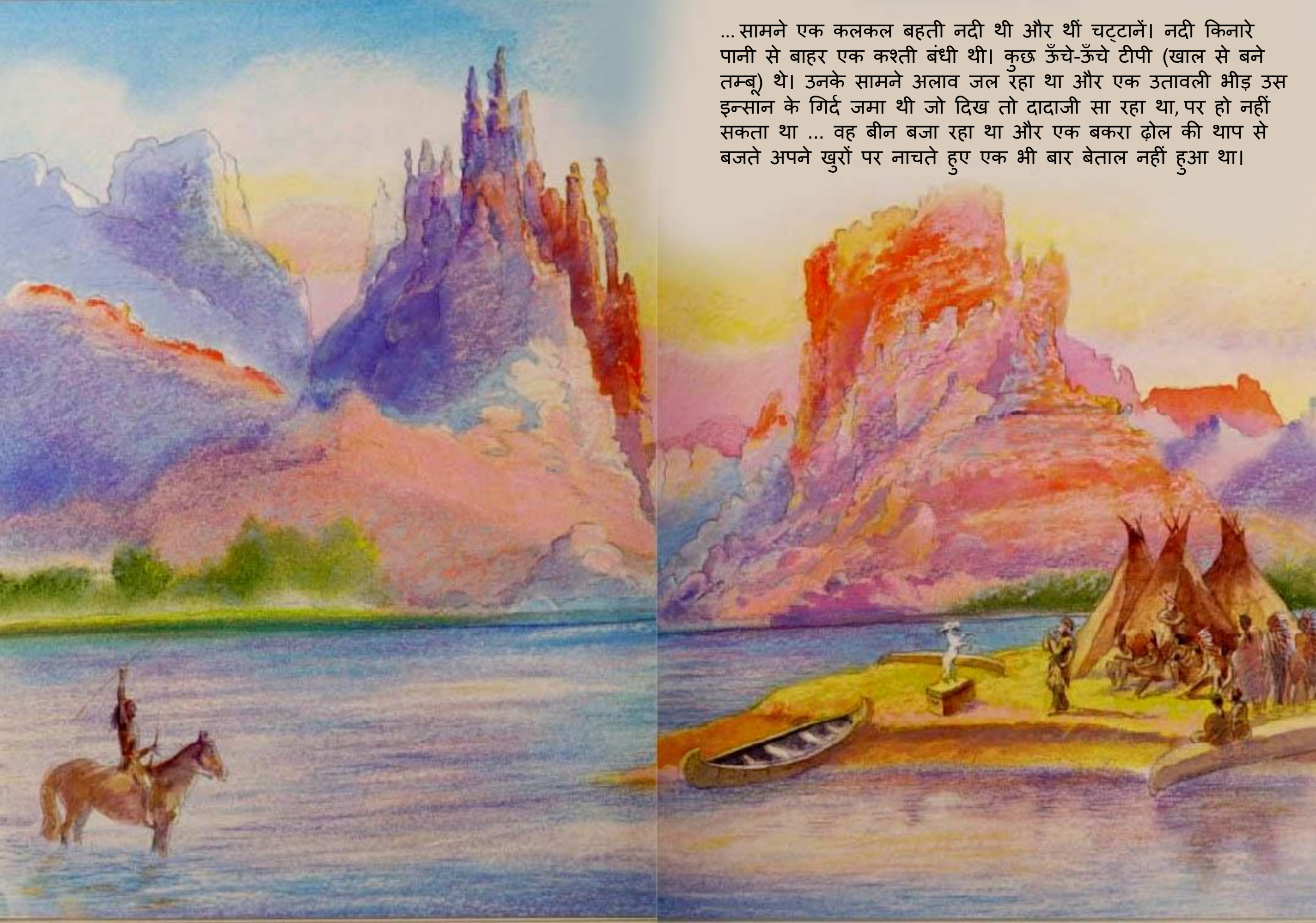


धमाका! धुंए के गुबार के साथ बीन और बकरा सन्दूक में गायब हो गए।

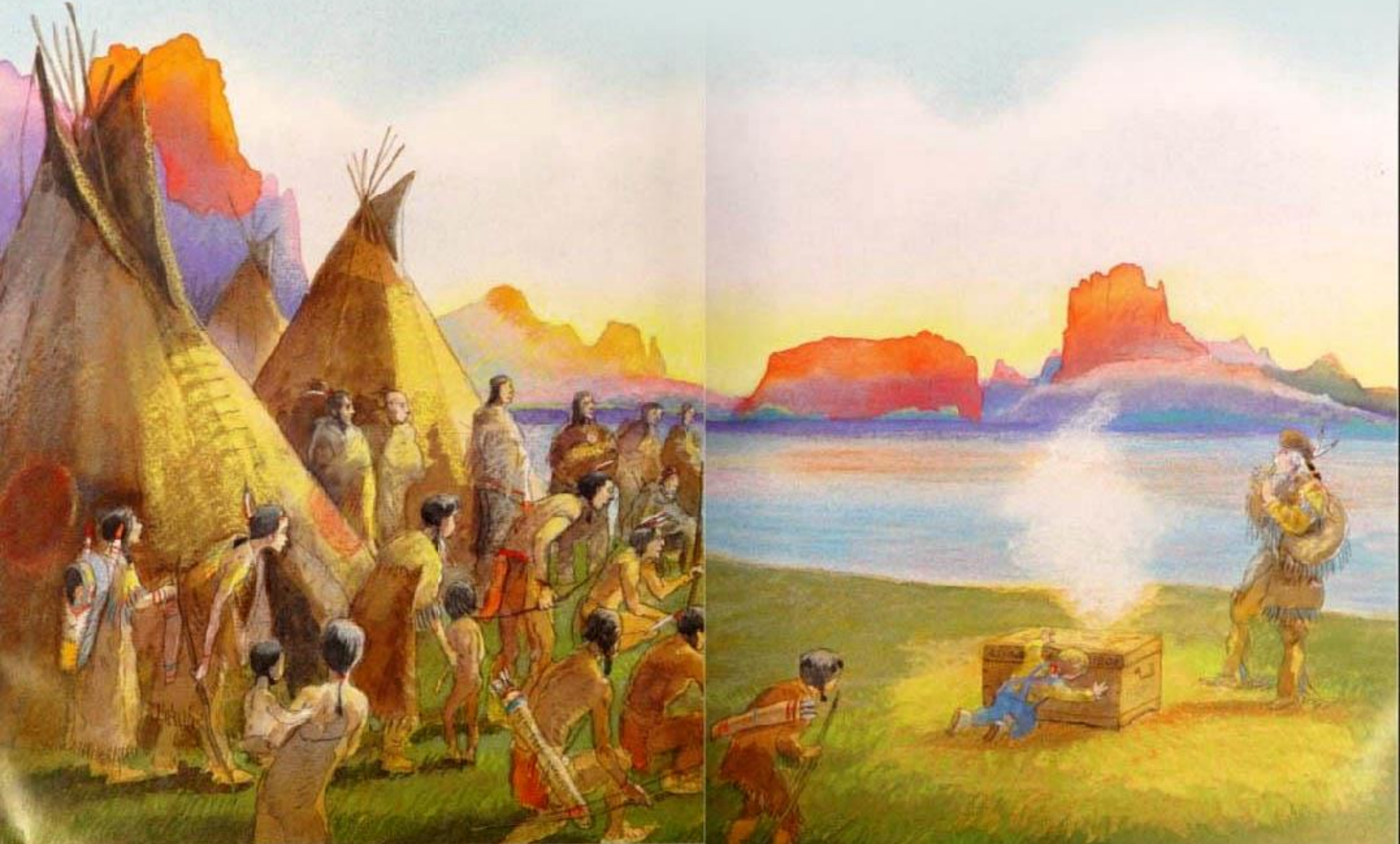
भीड़ ने खुश हो तालियाँ पीटीं, एंजल फिसलती-रपटती आई और उसने सन्दूक के एक सुराख़ से झाँक कर देखा ....

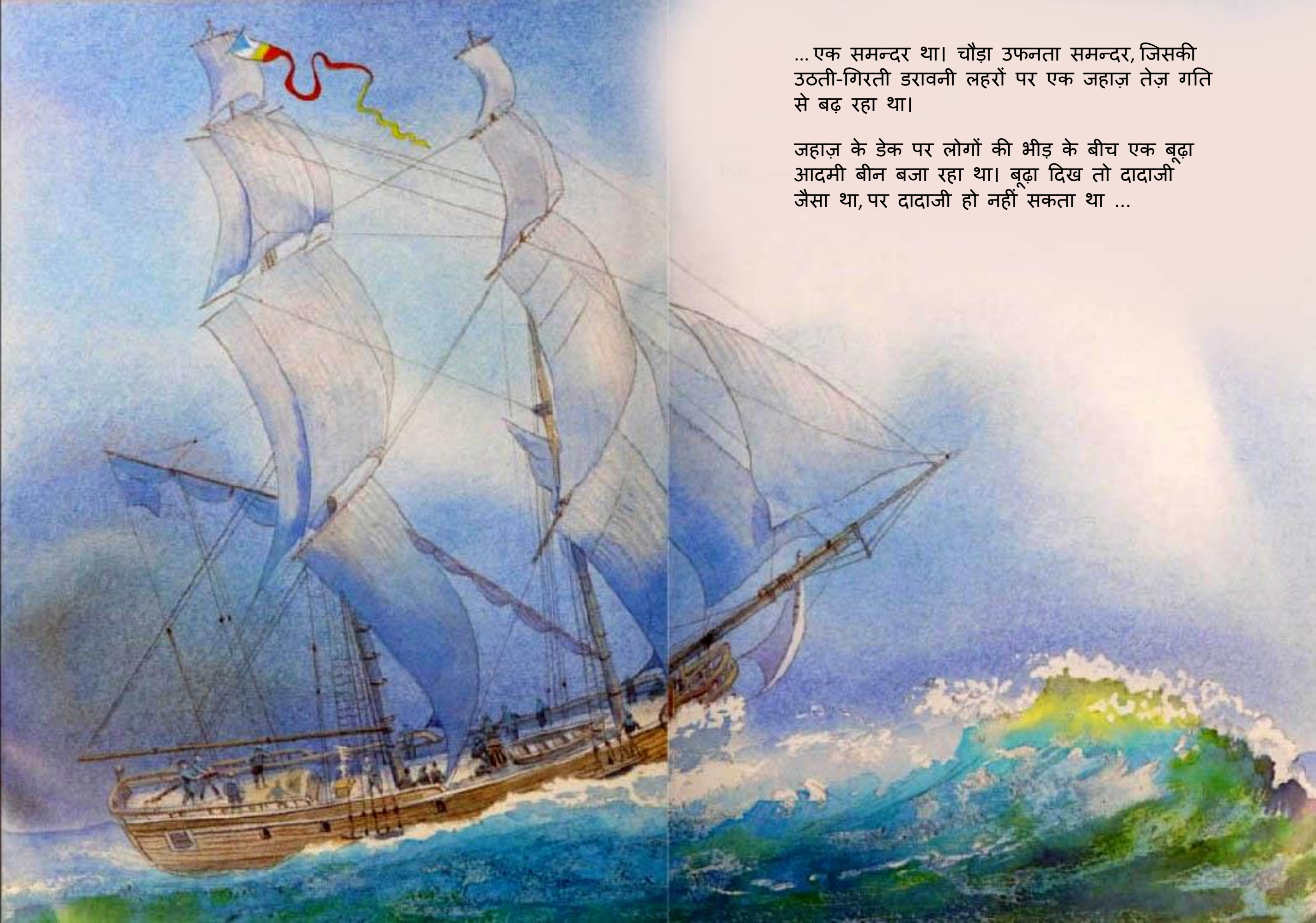


... सामने एक कलकल बहती नदी थी और थीं चट्टानें। नदी किनारे पानी से बाहर एक कश्ती बंधी थी। कुछ ऊँचे-ऊँचे टीपी (खाल से बने तम्बू) थे। उनके सामने अलाव जल रहा था और एक उतावली भीड़ उस इन्सान के गिर्द जमा थी जो दिख तो दादाजी सा रहा था, पर हो नहीं सकता था ... वह बीन बजा रहा था और एक बकरा ढ़ोल की थाप से बजते अपने खुरों पर नाचते हुए एक भी बार बेताल नहीं हुआ था।



धमाका! धुंए का गुबार छंटता उसके पहले ही एंजल
ने सन्दूक के सुराख़ से झाँका। उसने देखा ...



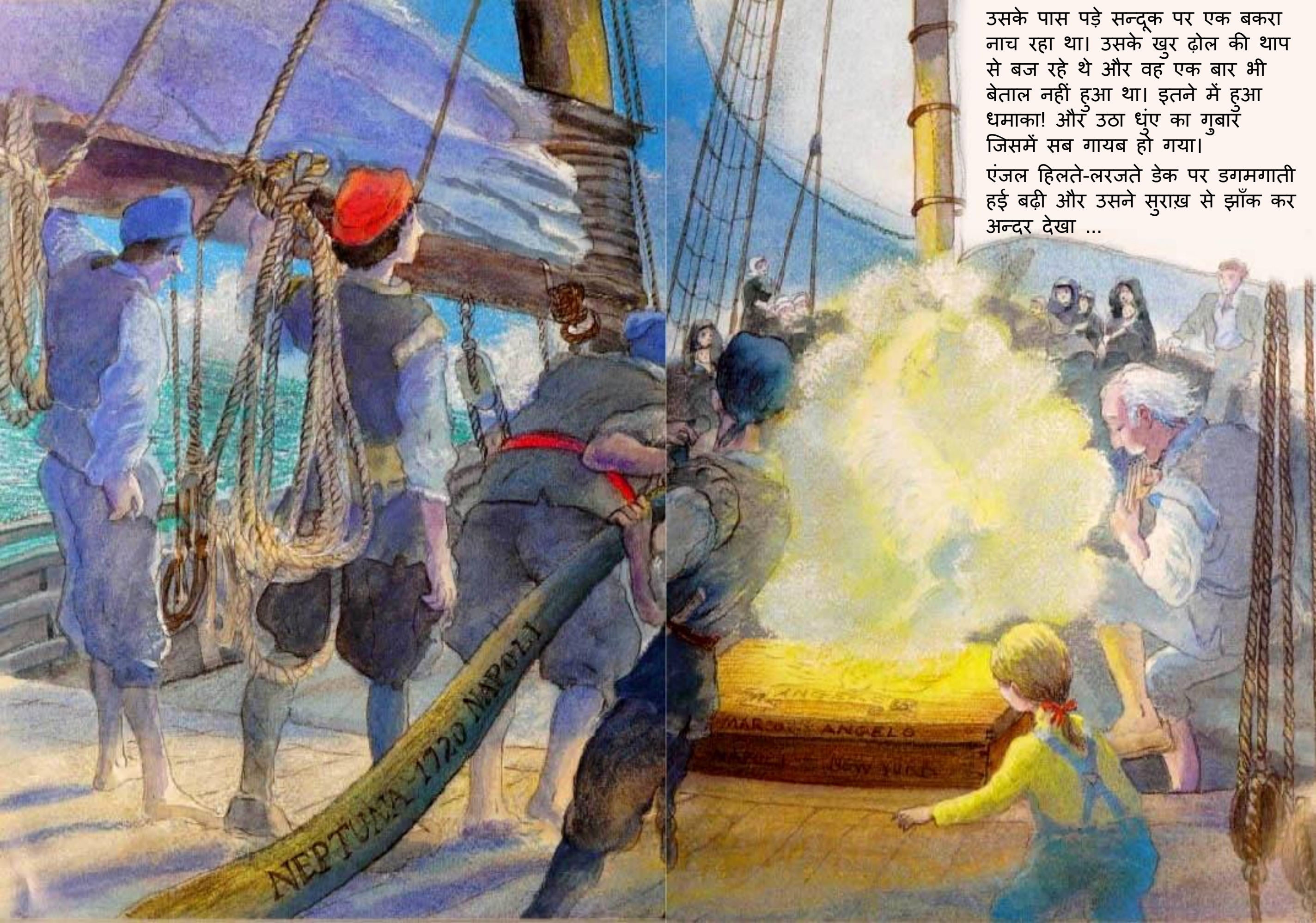


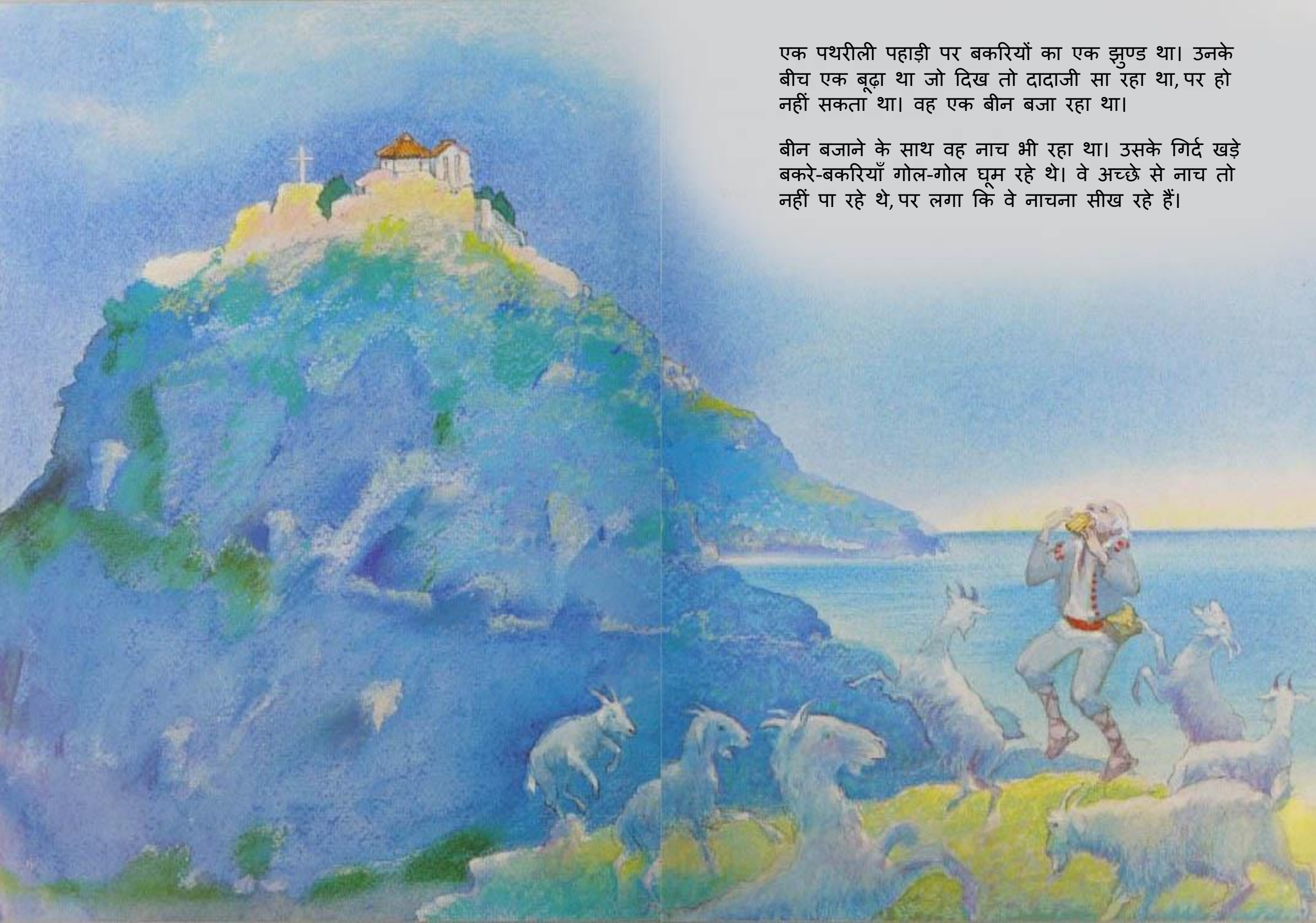
... एक समन्दर था। चौड़ा उफनता समन्दर, जिसकी उठती-गिरती डरावनी लहरों पर एक जहाज़ तेज़ गति से बढ़ रहा था।

जहाज़ के डेक पर लोगों की भीड़ के बीच एक बूढ़ा आदमी बीन बजा रहा था। बूढ़ा दिख तो दादाजी जैसा था, पर दादाजी हो नहीं सकता था ...

उसके पास पड़े सन्दूक पर एक बकरा नाच रहा था। उसके खुर ढ़ोल की थाप से बज रहे थे और वह एक बार भी बेताल नहीं हुआ था। इतने में हुआ धमाका! और उठा धुंए का गुबार जिसमें सब गायब हो गया।

एंजल हिलते-लरजते डेक पर डगमगाती हई बढ़ी और उसने सुराख़ से झाँक कर अन्दर देखा ...





एक पथरीली पहाड़ी पर बकरियों का एक झुण्ड था। उनके बीच एक बूढ़ा था जो दिख तो दादाजी सा रहा था, पर हो नहीं सकता था। वह एक बीन बजा रहा था।

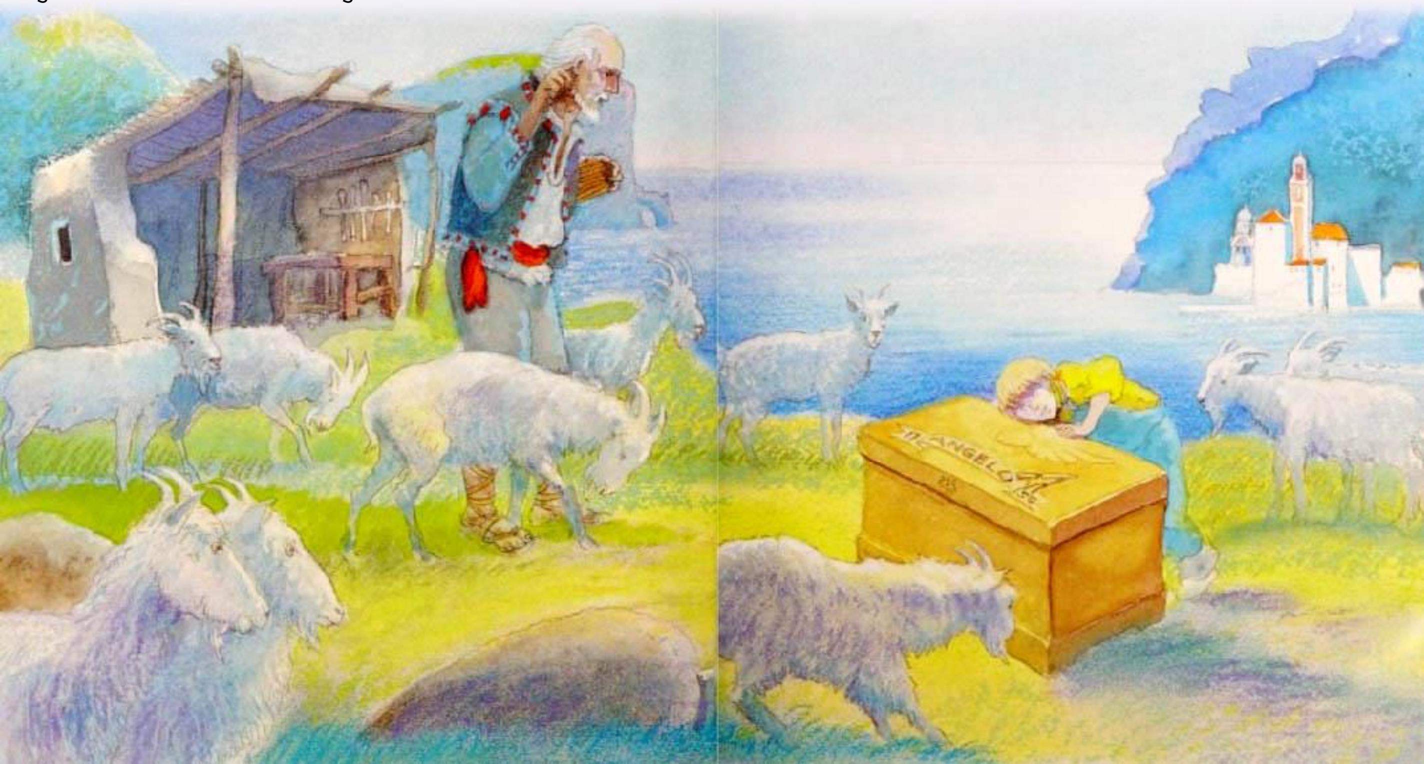
बीन बजाने के साथ वह नाच भी रहा था। उसके गिर्द खड़े बकरे-बकरियाँ गोल-गोल घूम रहे थे। वे अच्छे से नाच तो नहीं पा रहे थे, पर लगा कि वे नाचना सीख रहे हैं।

उस बूढ़े के पास ही लकड़ी का नया बना एक सन्दूक था। जब एंजल उस सन्दूक के पास गई, बूढ़ा मुस्कुराया।
"क्या यह सन्दूक आपने बनाया है?" उसने पूछा।
व्यक्ति ने हाँ में सिर हिलाया। "मैंने इस पर अपना नाम भी खोद कर उकेरा है।"
"यह सन्दूक है आख़िर किसलिए?"
"अरे एंजल," बूढ़े ने नरमी से कहा। "एक दिन जब यह तुम्हारा होगा, तब तुम्हें पता चल जाएगा। तब शायद तुम भी इस पर अपना नाम उकेरो!"

एंजल ने उस नए बने सन्दूक के सुराख़ों में से एक से अन्दर झांक कर देखा ...

... अन्दर कुछ न था। सन्दूक अंधेरा और खाली था।

बूढ़े ने अपना कान छू इशारा किया। एंजल ने फ़ौरन अपना कान एक सुराख से सटाया। और उसने समन्दर की आवजें सुनीं, कलकल बहती नदी को सुना, हवा को घास के बीच बहते-सरसराते सुना, तब बहुत ही दूर से एक बड़े शाहर की आवाज़ें सुनीं। ये आवाजें उसके अतीत की थीं और शायद उसके भविष्य की भी।

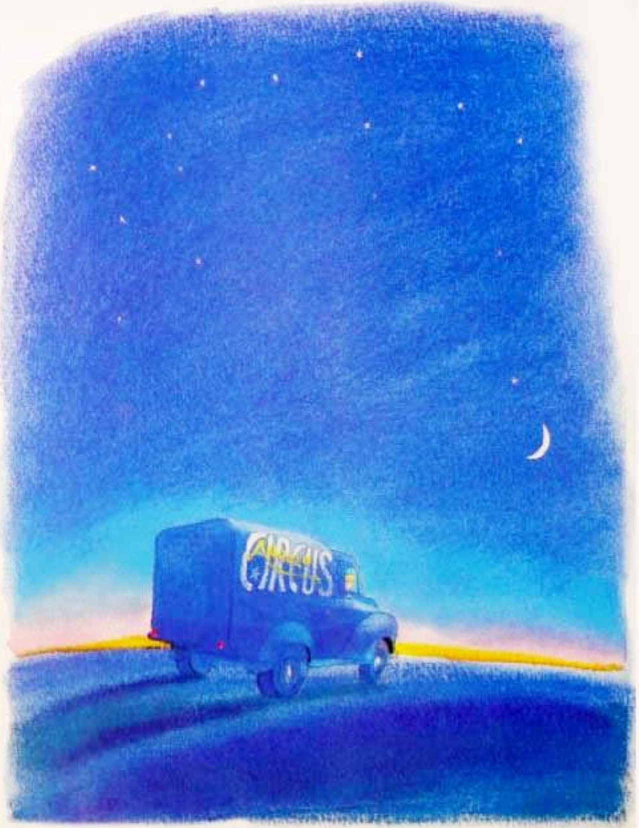




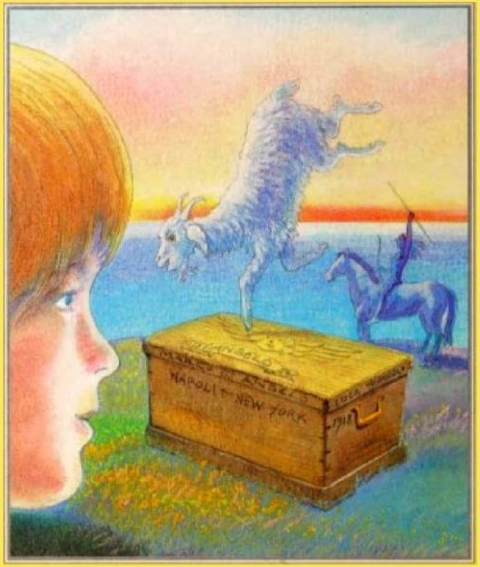
अचानक उसे अपने कंधे पर एक हाथ की छुअन महसूस हुई। ये तो दादाजी थे।

''उठो लाडली! रात के खाने का समय हो गया है,'' वे प्यार से बोले।





वे दोनों बड़े शहर से बाहर निकले और भविष्य की ओर बढ़ चले।



जब एंजल अपने दादाजी और उनके घुमन्तू शो के साथ निकली थी, उसे कतई अन्दाज़ न था कि दादाजी के उस पुराने सन्दूक में क्या है, जिस पर तमाम नाम उकेरे नज़र आ रहे थे। तब मानो जादू से सन्दूक में से एक नाचने वाला बकरा निकला। तमाशा खत्म होने के बाद एंजल को बकरे की फिक्र हुई। सो उसने सन्दूक में बने अनेक सुराख़ों में से एक से अन्दर झांक कर देखा और एक दूसरी ही दुनिया में जा पहुँची। यह दुनिया उसके अतीत की थी और संभवतः उसके भविष्य की भी।

पुरस्कृत लेखक-चित्रकार माइकल फोरमैन ने फिर एक बार एक मनोहारी कथा प्रस्तुत की है। उनकी हालिया पुस्तक *द लिटिल रेनडियर* बेहद प्रशंसित रही है। ''उनका लेखन और उनके चित्र, जो परंपरागत, आधुनिक व जादूई का मिश्रण हैं, विशुद्ध आनन्द देते हैं।''

-द स्कॉटस्मैन